ब्राजील, फ्रांस, इटली आदि में प्रसारण को बढ़ावा मिला और विश्व भर में सैकड़ों प्रसारण केन्द्रों की स्थापना की गई। ब्रिटिश राज के दौरान नवम्बर 1923 में रेडियो क्लब आफ बंगाल, 1924 में बंबई प्रेसीडेंसी रेडियो क्लब और मद्रास सहित अन्य रेडियो क्लब द्वारा प्रसारण शुरु हुआ। 23 जुलाई 1927 को इंडियन ब्राडकास्टिंग कम्पनी लि. को दो रेडियो स्टेशन संचारित करने के लिए अधिकृत किया गया। प्रसारण का दायरा बढ़ाने के लिए उद्योग और श्रम विभाग ने इसका नाम इंडियन स्टेट ब्राडकास्टिंग सर्विस (भारतीय राज्य प्रसारण सेवाएं) कर दिया। 1934 में सरकार ने दिल्ली में रेडियो स्टेशन की स्थापना की स्वीकृति प्रदान की। 8 जून 1936 को आईएसबीएस का नाम बदलकर आल इंडिया रेडियो रखा गया। इसी वर्ष दिल्ली केन्द्र से प्रसारण शुरु हुआ।

भारत में पहली बार रेडियो प्रसारण की शुरुआत मुंबई और कलकत्ता में सन 1927 में हुई थी। 1930 में इसका राष्ट्रीयकरण हुआ और तब इसका नाम भारतीय प्रसारण सेवा रखा गया था। सन 1957 में इस नाम को बदलकर आकाशवाणी रखा गया। कई भाषाओं में तथा विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत आकाशवाणी आज जन-जन की वाणी बन चुकी है। विविध भारती, आकाशवाणी की सबसे लोकप्रिय सेवा है। इसे विज्ञान प्रसारण सेवा भी कहा जाता है। आकाशवाणी का प्रमुख उद्देश्य लोककल्याण ही है। अतः इसका ध्येय वाक्य प्रचलन में आया बहुजनसुखाय-बहुजनहिताय, आज वह इसी प्रमुख ध्येय को लेकर चल रहा है।

विविध-भारती

विविध भारती रेडियो चैनल आकाशवाणी की सबसे लोकप्रिय और सर्वाधिक सुनी जाने वाली प्रमुख प्रसारण सेवा है। इसकी शुरुआत 3 अक्टूबर 1957 को की गई थी। इसकी स्थापना के पीछे बड़ा ही दिलचस्प वाक्या है। उस समय रेडियो सिलोन का बोलबाला था। एक से बढ़कर एक गीत इस चैनल के माध्यम से प्रसारित हो रहे थे। अमीन सयानी की खनकदार आवाज और गीत प्रस्तुत करने के कौशल से यह चैनल सर्वाधिक सुने जाने वाला चैनल बन गया था। यह

> “विविध-भारती पर मुख्यतः हिन्दी फिल्मी गीत सुनाये जाते हैं, इसके अलावा वार्ता, रेडियो वृत्तांत, नाटक, संगीत, साहित्य भारती, संस्कृत भारती, चित्र भारती, विज्ञान भारती, युवा भारती सहित अंग्रेजी में हर महिने के चौथे शुक्रवार को रात्रि के 10ण्00 बजे राजधानी दिल्ली के राजधानी चैनल से प्रसारित किया जाता है, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, महिलाओं के कार्यक्रम, बच्चों के कार्यक्रम सहित कृषि के विभिन्न पहलुओं पर भी इसमें व्यापक चर्चाएं प्रसारित होती हैं।

वह समय था जब भारतीय कम्पनियां अपने उत्पाद की बिक्री के लिए रेडियो का सहारा ले रही थीं। इस तरह देश का पैसा बाहर जाने लगा था। अपना पैसा किस तरह बचाया जाय, इस परिकल्पना को साकार करने के लिए पंडित नरेन्द्र शर्मा जी को फिल्मी लेखन के लिए बतौर एक अधिकारी बुलाया, तब उन्होंने अंग्रेजी के शब्द मिस्लेनियस को एक नया हिन्दी शब्द दिया विविध, इसी विविध को भारती से जोड़कर एक नया शब्द बना विविध-भारती, जो अत्यन्त ही लोकप्रिय हुआ। इसकी स्थापना के पीछे एक दूसरी वजह यह भी थी और वह यह कि भारत सरकार का ऐसा सोचना था कि फिल्मी गीतों को सुनकर लोग बिगड़ने लगे हैं। फिल्मी गीतों पर प्रतिबंध लगाने के बाद केवल इस चैनल पर सुगम संगीत ही प्रसारित किया जा रहा था। हालांकि इस अभिमत का कोई ठोस कारण नहीं था। यह मात्र कोरी कल्पना थी, जो बाद में निर्मूल साबित हुई।

विविध-भारती की स्थापना के पीछे केशव पांडेय, नरेन्द्र शर्मा, गोपालदास और गिरिजा कुमार माथुर को कैसे विस्मृत किया जा सकता है। विविध-भारती, आकाशवाणी की शुद्ध रुप से अखिल भारतीय मनोरंजन सेवा, थी। वहीं आकाशवाणी के पंचरंगी कार्यक्रम का अर्थ था, पांच कलाओं का समावेश होना। 3 अक्टूबर 1957 को विविध-भारती का आगाज शील कुमार शर्मा की आवाज में हुआ था। यह विविध भारती है, आकाशवाणी का पंचरंगी कार्यक्रम, लोगों की जुबान पर चढ़ चुका था।

विविध-भारती पर मुख्यतः हिन्दी फिल्मी गीत सुनाये जाते हैं, इसके अलावा वार्ता, रेडियो वृत्तांत, नाटक, संगीत, साहित्य भारती, संस्कृत भारती, चित्र भारती, विज्ञान भारती, युवा भारती सहित अंग्रेजी में हर महिने के चौथे शुक्रवार को रात्रि के 10ण्00 बजे राजधानी दिल्ली के राजधानी चैनल से प्रसारित किया जाता है, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, महिलाओं के कार्यक्रम, बच्चों के कार्यक्रम सहित कृषि के विभिन्न पहलुओं पर भी इसमें व्यापक चर्चाएं प्रसारित होती हैं।

हमारे देश में तकनीकी रूप में तीन तरह के रेडियो प्रसारण काम करते हैं। मीडियम वेव, शार्ट वेव और एफएम । इनके प्रसारण की फ्रीक्वेंसी